शैखुल इसलाम –
इमाम अनवारुल्लाह फारूखी-
जीवन व शिक्षण

अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को सम्पूर्ण पैगम्बरों का मुखिया व सरदार बना कर इस संसार में उजागर फरमाया। आप की मुबारक हस्ती को खत्म नबूवत का ताज पहनाया।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी व रसूल आने वाले नहीं। आप ही की रिसालत व नबूवत स्थापित रहेगी। अल्लाह तआ़ला इसलाम धर्म के प्रसारण व प्रचार के लिए, धर्म के शासन को फैलाने तथा सुन्नतों को जीवित करने के लिए सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की समुदाय में ऐसे विद्वान व विद्यार्थी पैदा फरमाता रहा जिन्हों ने इसलामी शिक्षा आम कीं।

इस ने ऐसे लोगों को भलाई की तौफीख दान की जो इसलाम के प्रचार तथा धर्म के प्रसारण के मार्ग में ना राजा से डरते हैं ना सेना व सिपाही से, कोई प्राकृतिक शक्ति इन के लक्ष्य को बदल नहीं सकती। इन्हें अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी का खौफ व भय नहीं रहता।

ऐसे ही पवित्र बन्दों से संबंध अल्लाह तआ़ला क़ुरान करीम में आदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः- यह वह लोग हैं जो अल्लाह के सन्देश को पहुंचाते हैं तथा इस से डरते हैं एवं अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते था अल्लाह हिसाब लेने वाला काफी है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं। बल्कि वह अल्लाह तआ़ला के रसूल और अंतिम नबी हैं। तथा अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को पूरी तरह जानने वाला है।

(सुरह अल अह़ज़ाबः 33:39/40)

इन दो आयतें में अल्लाह तआ़ला ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की प्रतिभा को प्रकट किया के आप इस के आदरणीय रसूल हैं। और अंतिम पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम है। तथा अपने प्रिय बन्दों का भी वर्णन किया।

इन की इ़मानी भावना तथा धार्मिक महत्व को उजागर किया तथा इन के प्रसारण की चिन्ता को उजागर किया के वे अल्लाह तआ़ला के सन्देश को बन्दों तक उचित रूप से पहुंचाया करते हैं तथा वह अल्लाह तआ़ला के अतिरिक्त किसी से भय व खौफ नहीं खाते। अल्लाह तआ़ला के सन्देश को सामान्य करने से संबंधित कोई चीज़ इन के लिए रुकावट नहीं बनती।

इन्ही धन्य व मुबारक हस्तियों में हज़रत शैखुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इ़माम अबुल बरकात हाफिज़ मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी, निर्माता जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह की एक विशाल हस्ती है।

अल्लाह तआ़ला ने आप को धार्मिक व सांसारिक दृश्य व गुण से आभूषण किया। आपको सुशिक्षित व सुविज्ञ में दक्षता प्रदान किया तथा सामाजिक व अल्पव्ययी मामले में उजागर फरमाया।

यह एक सच्चाई है के अल्लाह तआ़ला हर सदी (शतक) में इसलाम धर्म की जागृति तथा इस में आने वाली रुकावटों तथा बुराईयों की समाप्ति के लिए माननीय लोगों को संसार में पैदा फरमाता है।

जो अल्लाह तआ़ला की सन्तुष्टी को पूरा करते हैं, सिद्धहस्त धर्म की सुरक्षा करते हैं तथा समुदाय की सुधारता को परिणाम देते हैं। जैसा के सुनन अबु दाउद में ह़दीस पाक हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु वर्णित करते हैं, जहाँ तक मैं जानता हुं ह़ज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः निस्संदेह अल्लाह तआ़ला प्रत्येक सदी के प्रारंभ में (एक ह़स्ती को) इस समुदाय के लिए भेजता है जो इस के लिए इस के धर्म की जागृति करते है।

(सुनन अबी दाउद, ह़दीस संख्याः 4293)

ह़ज़रत शेखुल इसलाम का सारा जीवन इस ह़दीस शरीफ का सम्पूर्ण उदाहरण है। आप ने अपना सारा जीवन इसलाम धर्म में आने वाली नवप्रवर्तन व निषिद्ध मिटाने के लिए गुज़ारा तथा अपनी दिन-रात समुदाय की ह़िदायत के लिए बिताया।

विशेष रूप से अहले देक्कन के लोग आप की सेवाओं के आभारी व कृतकृत्य हैं। ह़ज़रत शेखुल इसलाम निर्माता जामिया निज़ामिया रह़मतुल्लाहि अलैह ने धार्मिक व ज्ञानी, अ़मली व सुधारता, स्थानीय व राष्ट्र तथा सामाजिक व राजनीतिक हर मैदान में और सर सतह पर कार हाय नुमाया परिणाम दिए हैं। तथा आज देक्का वालों का जीवन के हर क्षेत्र व भाग में जो भलाई व अच्छाई नज़र आती है वह सैयदी शेखुल इसलाम रह़मतुल्लाहि अलैह का फैज़ान व आशीर्वाद है।

हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह का जन्म 4 रब्बि उस सानी 1264 हिज्री भारत के एक इलाक़े खनधार शरीफ जिले नानदेड जगह महाराष्ट्र में हुई।

आप का सिलसिला नसब पिता की ओर से 39 वास्तों से अमीरुल मोमिनीन हज़रत फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जा मिलता है तथा माता के वास्ते से इ़माम अल तरीक़ह हज़रत सैय्यद अहमद कबीर रिफाई़ हुसैनी रहमतुल्लाहि अलैह (देहन्तः 578 हिज्री) तक पहुंचता है।

अफगानिस्तान के इलाक़े से तशरीफ लाने वाले आप के पूर्वज हज़रत शहाबुद्दीन फर्क़ शाह अलैहि रहमा हैं। यह वह हस्ती है जिन की वंश में हज़रत फरीद उद्दीन गंज शक रहमतुल्लाहि अलैह तथा इ़माम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ सानी अलैहिस सलाम (देहान्तः 1034 हिज्री) जैसी महान हस्तियां पैदा हुईं। हज़रत शेखुल इसलाम निर्माता जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह अकसर वंश का संबंध ओहाद खज़ात से था। जिन्हों ने अपने अपने दौर में बेशुमार ज्ञानी व इसलाही कार्यकलाप वकारनामे अंजाम दिए हैं। (मआ़रिफ अनवार, पः 02)

ज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने जीवन के प्रारंभ पांच वर्ष गुज़ारने के बाद हज़रत सैय्यद शाह बदीअ़ उद्दीन रिफाई़ खनधार रहमतुल्लाहि अलैह के यहाँ नाज़ेरा (अनुवाचन) क़ुरान करीम शुरु किया। 11 वर्ष की उ़म्र में हज़रत हाफिज़ अमजद अली साहब रहमतुल्लाहि अलैह की निगरानी व प्रबोधन में (जो क अन्धे बुज़ुर्ग थे) हिफ्ज़ क़ुरान करीम पूरण किया।

शिक्षा के प्रारम्भ तथा विशेष शिक्षण अपने पिता हज़रत खाज़ी अबु मुहम्मद शुजआ़ उद्दीन खनधार रहमतुल्लाहि अलैह से प्राप्त की तथा तफसीर, हदीस तथा फिक़्ह हज़रत फयाज़ उद्दीन तथा नग आबादी रहमतुल्लाहि अलैह,

हज़रत अबदुल हलीम फिरंगी महली रहमतुल्लाहि अलैह, हज़रत अबदुल हई फिरंगी महली रहमतुल्लाहि अलैह तथा हज़रत शेख अबदुल्लाह यमनी रहमतुल्लाहि अलैह जैसे आदरणीय व माननीय विद्वानों से विशेष लाभदायक ज्ञान प्राप्त किया तथा सम्पूर्ण ज्ञान में विशेषज्ञता प्राप्त की।

इन सब के बाद लगभग देढ़ वर्ष आप ने शासकीय व सरकारी कर्मचार रहे। परन्तु अल्लाह तआ़ला का उद्देश्य व विचार कुछ और ही था। आप को कर्मचारी बन कर किसी के प्रति रहना नहीं था। बल्कि इसलाम जाति के ज्ञानी व आपसी तथा शिष्ठाचार व इसलाही पथप्रदर्शक बनना था।

हालात कुछ ऐसे हुए के आप ने कर्मचारी से स्मरपण दे दिया। सरकारी कर्मचारी से अलग होने के बाद लोग आप को फिर से कर्मचारी से सम्पर्क होने के लिए सुझाव देने लगे।

हज़रत शेखुल इसलाम ने इन सुझावों को स्वीकार नहीं किया तथा धार्मिक ज्ञान की शिक्षा व अध्यापन में व्यस्त हो गए। अर्थात आप ने अपना सारा ध्यान इसी ओर कर लिया। धार्मिक ज्ञान के प्यासे आप की सेवा में उपस्थित हुआ करते तथा ज्ञान व प्रज्ञानता के सागर से सैराब हो करअपनी ज्ञानी व आत्मिक प्यास बुझा लिया करते।

समय के प्रतापी की शिक्षा

तुरंत आप का सर्वश्रेष्ठ परिवर्तन तथा उच्च शिक्षा देना का अवसर मिला तथा सलतनत आसिफिय के 6 नंदन नवाब मीर महबूब अली खान की शिक्षा व परवरिश के लिए आप को प्रवरण किया गया। जब शेखुल इसलाम ने साही फरमान देखा तो आप ने इसी स्वीकार नहीं किया तथा कहा के सार्वजनिक सेवा राजाओं व बादशाहों की सेवा से कहीं अधिक श्रेष्ठतर है।

अतः मैं इस को स्वीकार नहीं कर सकता, किन्तु हज़रत मौलाना मसीअ़ उल ज़मां रहमतुल्लाहि अलैह ने जो इस समय महबूब अ़ली पाशा कि शिक्षा व परवरिश पर निर्धारित थे हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह से इस जिम्मेदारी को परिणाम देने की इच्छा की तथा इस माननीय अवस्थिति को स्वीकार करन की लगातार विनती की। अंत में आप ने यह ओहदा स्वीकार कर लिया।

अल्लाह तअ़ाला को स्वीकृत था के आप समुदाय के सुधारता व उद्धार व शोधन के साथ प्रतापी व बादशाहों की शिक्षा व परवरिश भी करें। क्यों के हज़रत शेखुल इसलाम कि चिन्ता व सोंच हमेशा यही रहती थी के समुदाय की सुधारता का जिम्मा उठाया जाए।

हज़रत शेखुल इसलाम ने ओहदे को इस लिए भी स्वीकार किया के उस समय के बादशाह की सुधारता व उद्धार हो जाए तो जनता की सुधारता व इसलाह सरलता से सम्भव है। यदि शाहों की उचित रूप से परवरिश हो जाए तो जिस प्रकार चाहे जनता के धारे को सांसारिक उन्नति व प्रगति तथा धार्मिक वातावरण से मिलाया जा सकता है।

अर्थात यह सिलसिला लगातार जारी रहा। महबूब अली पाशा के बाद इन के नन्दन नवाब मीर उसमान अली खाने ने और इन के दोनों पुत्र नवाब मीर हिमायत अली खान आज़म जाह बहादुर और नवाब मीर शुजआ़त अ़ली खान मोअ़ज़म जाह बहादुर ने हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह से परवरिश पाई।

मदीने में निवास

1305 हिज्री में हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने हिजाज़ की धरती की तीसरी यात्रा की। आप हज्ज की कृपा से आभूषण होने के बाद

मदीने शरीफ में निवास फरमा हुए तथा 3 वर्ष तक लगातार सरकार के दरबार में उपस्थित रहे।

इसी धन्य निवास के बीच आप ने अपनी दीप्तिमान पुस्तक अनवार अहमदी प्रसिद्ध फरमाई। जिस में आप ने रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की उत्तमता व प्रतिष्ठा पर आत्मिक विशष पर लिखा। इस पुस्तक की तरतीब से संबंधि खुद शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह लिखते हैः-

जिस ज़माने में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अतीउत्तम नज़र इस सेवक पर की थी। कुछ दिन ऐसे गुज़रे के कोई काम अध्यापन से संबंधित ना रहा। क्यों के बेकार नहीं रहता, यह बात दिल में आई के कुछ विषय, सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मीलाद शरीफ के उत्तमता व प्रतिभा के किताब व हदीसों से प्रवरण कर के स्वीकार किए जाएं।

हर चंद शाइरी में ना किसी से है ना महारत, ना भारतवासी के मुहवारे से परिचय, किन्तु केवल इस अनुसार से के यह सेवा स्वंय इस स्थान के लिए है। और विस्मित नहीं इसलाम जाति को इस से कुछ लाभ भी प्राप्त हो, चंद लोकोक्ति लिखे तथा हंवज़ उद्देश्य तक पहुंचाना था के इन लोकोक्ति की शरह करे का ध्यान इस कारण से जन्म लिया के जब तक माक़ज़ इन विषय का वर्णन ना किया जाए, विश्वासनीय ना समझे जाएंगे।

अर्तात इसी दौरान हुज़ूरी में चंद कथन की शरह लिखी गई थी। (मुखदमा अनवार अहमदी)

सरकार के आदेश पर देक्कन वापसी

हज़रत शेखुल इसलाम हैद्राबाद देक्कन से प्रवासन फरमा कर अंत तक मदीने में निवास के उद्देश्य से उपस्थित हो चुके थे। किन्तु दरबार रिसालत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से आप को देक्कन की धरती वापसी का आदेश हुआ।

आप को यह चिन्ता हुई के मैं प्रवासन यार से बेक़रार हो कर मदीने उपस्थित हुआ तथा यही सकून व आनन्द प्राप्त करना चाहता हुँ। यदि देक्कन वापस जाउँगा तो महबूब के दर से जुदाई हो जाएगी। तुरंत मक्के रवाना हुए, अपने पीर शेख ज़ुल अरब व अ़जम हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि अलैह की सेवा में रुजू हुए तो हज़रत ने फरमाया के रिसालत के आदेश में लोक-परलोक का आशीर्वाद है। आदेश के संपादन अनिवार्य है तथा इस में की सम्भावना नहीं।

(मआ़रिफ अनवार, पः 06)

हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह इच्छा थी के मदीने में सकूनत प्राप्त कर लें तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मरज़ी पर अपनी मरज़ी को त्याग कर दिया तथा हैद्राबाद देक्कन वापस हो गए।

अतः यह घोषणा हो रही थी के स्वंय हज़रत शेखुल इसलाम को मदीने में निवास करना नहीं बल्कि निर्माण को ताजदार महीना सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से सम्पर्क करना है तथा इन के दिलों में प्रेम व मुहब्बत का दीपक दीप्तिमान करना है।

दाइ़रुल मआ़रिफ का संस्थान

1308 हिज्री में हैद्राबाद देक्कन वापसी के बाद हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने इसलामी ज्ञान व साहित्यिक रचना की अ़रबी पुस्तकों

की प्रसारण व प्रकाशन के लिए सार्वलौकिक अनुसंधान संस्था "दाइरुल मआ़रिफ" का संस्थान उद्घाटन किया।

इस उद्देश्य के व्यवस्थापन व संचालन को अच्छे रूप से परिणाम के लिए आप ने एक संघ नियुक्त किया जिसे दाइ़रुल मआ़रिफ के सम्पूर्ण ज़िम्मेदारियां के जिम्मे सौंप दी थी। इस उद्देश्य से बहुत सी पुस्तकों पर अनुसंधान व खोज हुई तथा इन को प्रकाशन में लाया गया।

विषय (मक़तूतात) के समाहरण से जिन को निकाल कर इस विचार ने संसार के सामने पेश किया इसे संसार के ज्ञानी दफन नहीं कर सकती। आज यही उद्देश्य इसलामी पुस्तकों के अनुसंधान के हवाले से अनुसंधान के विश्व व रीसर्च में नामवर है तथा हैद्राबाद की एक विशाल पहचान बन चुका है।

मदीने तैयिबा में निवास के बीच हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने व्यक्तित्व रूप से खुद के रूपय खर्च कर के हदीस शरीफ के प्रामणिक व शासनानरूप पुस्तकों के लिखित भागों को व्याख्या करवाया। जिस में कंज़ुल उ़म्माल शरीफ सूची के साथ है। यह फन हदीस शरीफ की वह विशाल पुस्तक है, जो 70 वर्ष से अधिक हदीस के पुस्तकों का सारांश कहलाती है। जिस में 46,616 हदीसें उपस्थित हैं।

अधिक यह पुस्तक हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह का ही फैज़ान व आशीर्वाद है के दाइ़रुल मआ़रिफ से कंज़ुल उम्माल का प्रकाशन हुआ। तब संसार ने देखा के कंज़ुल उ़म्माल हदीस शरीफ का बहुत बडा संकलन व समूह है तथा सर्व संसार व विश्व में लाभ उठाने का माध्यम है।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 67)

हिजाज़ (सऊदी अ़रब) से वापसी के बाद हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह दोबारा लिखित व व्याख्या तथा दर्स व पढाने में व्यस्त हो गए। ताकि इसलामी चिन्ता व सोंच का प्रचार हो, सहीहं अखीदों (विश्वास) की ध्यान हो। समुदाय की विश्वासनीय व अ़मली इसलाह, जनता की सुधारता प्राप्त करें तथा धार्मिक व सांसारिक हर मैदान में प्रगति व उन्नति की राहें तय करते रहें।

झूठे फिरखों की छल व धोके पर दुःख का प्रदर्शन

उस दौर में लोग धर्म व मसलक से दौर गुमराहों का शिकार हो चुके थे, इसलाम के कुछ नामराशी धर्म के नाम पर बेदीनी फैला रहे थे, किताब व सुन्नत पर अ़मल का दावा करने वाले गुमराह फिरखे (सम्प्रदाय व पंथ) अपने झूठे सोंच-विचार का जाल बिछा चुके थे तथा हमारे भोले-भाले भाई इन के दाम फरेब में आ रहे थे।

इस सिलसिले में यह बात रोज़ रोशन के प्रकार हुई है के झूठे फिरखों के लोगों की संख्या प्रतिदिन बढ़ते जा रहा है तथा इन फिरखों में शामिल होने वाले लोग किसी दूसरे धर्म के नहीं, खुद मुसलमान हैं। किसी और फिरखों के नहीं, अहले सुन्नत व जमात हैं। झूठ के इन पर दुःख का प्रदर्शन करते हुए तथा जनता अहले सुन्नत की असावधानी पर अफसोस करते हु हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

ध्यान करने के योग्य यह बात है के जिसका प्रभाव बढता है हमारे सुन्नी लोग ही पर पढता है। खादियानी, नेचरी आदि ने एकता के सामान्य निमन्त्रण दिया।

और प्रसारण व प्रचार कर रहे हैं, किन्तु ना कोई अहले यूरोप ने इनकी बात मानी, ना हिन्दुओं ने और ना किसी इसलामी फिरखे ने, अल्लाह तआ़ला मारी जमात को सलामत रखे। यही लोग धनवान हैं के प्रत्येक की मुराद पूरी करते हैं तथा सामयिक इन के शरीक-हाल हो कर इन का एक संघ बना देते हैं। बुद्धि से लाचार हों तो हों, न्यायकर्ता व अपक्षपात इस दर्जे के के जिस ने कुछ कह दिया।

इसको चिन्ता से दखेंगे और अज्ञानी और निर्बुद्धि से उत्तर ना सूझे तो इसी का नाम न्याय रखेंगे के वह मान लिया जाए। इधर अज्ञानियों व जाहिलों को शिकार करने के हथकण्डे हाथ लग गए हैं। वह ऐसे दाम बिछाते हैं के व्यर्थ में फंस जाएं।

यदि ज्ञान हो तो इन की मक्कारियां तथा झांसों का उत्तर दे सकें, फिर बुद्धि पर नाज़ है के हम हर चीज़ को अच्छे प्रकार से समझ सकते हैं। यदि कुछ खर्च कर के इ़मान खरीदा होता तो इस के खो जाने का कुछ दुःख होता।

वह तो पिता-दादा की कमाई थी, बाप-दाद के प्रकार बेपरवाह लुटा देनाकोई कठिन बात नहीं, यदि एक रुपय कोई धोका देकर ले जाए तो जीवन भर याद रखेंगे, किन्तु कोई फुसला कर इ़मान ले जाए तो इस की कुछ चिन्ता नहीं, अब कहिए के इन को इ़मान से कया संबंध? फिर ऐसों का अहले इसलाम में रहने से कया लाभ!! बल्कि ऐसे लोगों को तो अलग हो जाना ही अच्छा है।

किन्तु अफसोस के योग्य यह होगा के कोई इ़मानदार मानव बेइ़मान हो जाए।

आश्चर्य नहीं के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में इसी प्रकार संकेत किया हो के अंतिम ज़माने में जो फितने हों

इनको मकरूह ना समझो, स्वंय यह दुआ करना चाहिए के अल्लाह तआ़ला अहले इ़मान को निष्ठा व दृढ़ता (इस्तेखामत) दान करे के अंतिम ज़माने के फितनों से सुरक्षित रहें।

(मखासिद उल इसलाम, भाग-04, पः 68/69)

झूठे अखीदों का निराकरण

गुमराह फिरखों (संप्रदाय) की ओर से सगातार आक्रमणों के कारण और सही व शुद्ध अखीदों (विश्वास) से संबंधित जनसाधारण मुसलमानों की भलाई के कारण ह़ज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने अपने मन को चुनौती दी तथा जिस के कारण से धर्म सम्पूर्ण के विरुद्ध कोई मामला पेश होता तुरंत इस का मिटा देते।

इस दौर में अल्लाह तआ़ला की जात व गुण से संबंधित बेजा तावीलात किए जा रहे थे, जिन से इस की खालिखीयत का इन्कार हो रहा था। ह़ज़रत शेखुल इसलाम ने अपनी पुस्तक मखासिदुल इसलाम 3 भाग में इस विशेष पर लिखी जाने वाली पुस्तक "अलकलाम" की समय पर प्रकाशन किया।

अंतिम पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की खातमियत में झूठे तावीलात के द्वारा विश्वास खत्म नबूवत पर रकीक संदेह पैदा किए जा रहे थे। ह़ज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने इस से संबंधित सम्पर्ण शक व संदेह को दफा करते हुए मिरज़ा खादियानी तथा इस के साथियों का अत्यन्त उच्चता तथा सम्पूर्ण संजीदगी से रद्द किया।

और इस विषय पर लिखी जाने वाली पुस्तक "इज़ालतुल औहाम" और "ताइ़दुल ह़क़" का "इफादतुल इफहाम" (वह भाग) और "अनवारुल ह़क़" नामी पुस्तकें लिख कर आप ने फर्ज़ मनसबी समापन कर दिया।

गुमराह फिरखों की ओर से जामियत तौहीद तथा शिर्क को दपा व बिदअ़त (नवीनता व नवप्रवर्तन) के घमण्ड में रिसालत की शान में निरादर की सोंच दी जा रही थी। आप (रहमतुल्लाहि अलैह) ने सम्पूर्ण रूप से इस की ओर ध्यान की तथा अपनी पुस्तकों व रचना के द्वारा उस फितने का खात्मा किया। विशेष रूप से मदीने में लिखी गई पुस्तक "अनवार अहमदी" और मदासिदुल इसलाम के 11 भाग से किताब व सुन्नत के आधार में रिसालत की शान तथा नबूवत के स्तर को उजागर किया।

जब चारो इ़मामों की तखलीद (पालन करना) को गुमराही से तुलना किया जा रहा था, आप ने फिक़्ह तथा तखलीद की महत्व व वैभव पर *हखीखतुल फिक़्ह* नामी एक अनुसंधान पुस्तक 2 जिल्दों में लिखी।

पैगम्बरों के मोअ़जुज़ात (चमतकार) का इनकार तथा इस में गलत तात्पर्य पर सम्पूर्ण निर्धारित एक रिसाला *अलतहरीर* प्रकाशन हुई, हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने बुद्धि व व्याख्या तथा मनोविज्ञान व अध्यात्म विद्या हर क्षेत्र से मखासिदुल इसलाम के दूसरे भाग तथा 9 भाग में चमतकार (मोअ़जज़ात) की सच्चाई को साबित किया।

फिरखे रवाफिज़ की सरकोबी के लिए इस के झूठे अखीदों (विश्वास) सोंच-विचार से संबंधित मखासिदुल इसलाम 5-6 भाग में विस्तार व तफसील बहस व परिचर्चा की तथा क़ुरान और हदीस के आधार में इस को लिखित रूप से परिणाम दिया।

हले क़ुरान के नाम से एक फिरखा ज़ोर पकड रहा था, आप ने इस की शरई़ गिरफ्त फरमाई तथा हदीस की *हुज्जियत* (वादविवाद व शास्त्रार्थ) तथा इस की आवश्यकता को किताब व सुन्नत के स्वीकृत दलीलों से मकासिदुल इसलाम के 4 भाग में साबित किया।

समुदाय की सुधारता के तत्व और इस के उपाय

अतः हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने क़ौम व समुदाय की सुद्धारता के लिए पत्र व पुस्तकें के अतिरिक्त हर सम्भव साधनको उपयोग किया। एक ओर अनुसंधान पुस्तकें की प्रकाशन का सिलसिला जारी रहा तो दूसरी ओर ज्ञानी व धार्मिक आश्रय पुस्तकों के लाने के लिए आसिफिय सेन्ट्रल लाईब्रेरी का प्रतिष्ठान आप ही की स्वंय कोशिशों का परिणाम है।

जो जनता की ज्ञानी व शिष्टाचार आवश्यकता के लिए लाभदायक का कारण साबित हई।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 68)

सुमदाय व क़ौम की शरई निदेशन व मार्गदर्शन के लिए जामिया निज़ामिया के प्रति हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी व्यक्तित्व निगरानी में दारुल इफता की बुनियाद डाली, दारुल इफता के स्थापना से ले कर अब तक लाखों फतावा जारी हो चुके हैं। जामिया निज़ामिया के दारुल इफता से जारी होने वाले फतावा को भारत की राज्य सरकार, सरकारी विभाग, विशेष रूप से देश के सम्पूर्ण अदालतें सम्मान व आदर की निगाहों से देखती हैं तथा इन्हें स्वीकार करती है।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 76)

इसी प्रकार आप ने ज्ञानी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए *इशअ़ातुल उ़लूम* नाम से एक संगठन स्थापन किया। जहाँ से अखीदों व अ़ामाल की सुधारता से संबंधित सैंकडो पुस्तकें प्रसिद्ध व प्रकाशित हो कर उपलब्ध आ चुकी हैं तथा आज भी धार्मिक व पुस्तक के प्रकाशन व विभाजन का सुन्हरा सिलसिला जारी है।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 60)

जामिया निज़ामिया की स्थापना तथा इस का लक्षय

जामिया निज़ामिया जो आज देश की एक विशाल व प्राचीन इसलामी विस्वविद्यालय है। इस की स्थापना का उद्देश्य व लक्षय यही है के मुसलमानों में धार्मिक अभिज्ञता व चेतना पैदा हो जाए। इन्हें ध्रामिक शिक्षा से उजागर करवाया जाए।

इसलाम धर्म के प्रचार तथा प्रसारण की जाए, समुदाय के यूवक को इस कार्य के लिए उभारा जाए। इन्हें लेखन व व्याख्या के योग्य बनाया जाए। इन में भाषण व लिखने की गुण पैदा किए जाएं तथा इन से सत्य मसलक अहले सुन्नत व जमात की सुरक्षा की सेवा ली जाए। इस के सही व उचित अखीदों के प्रसारण का काम लिया जाए।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 70, अनवार उल अनवार, पः 134/135)

सर्व प्रशंसा व गुणगान अल्लाह तअ़ाला ही के योग्य है जामिया निज़ामिया अपने निर्माता की चिन्ता व सोंच से रोशनी प्राप्त करते हुए, इन्ही लक्षय के समापन में प्रगति व उन्नति कर स्थापित है तथा यह सत्य है के यहाँ के पढे हुए तथा विद्वान भारत व भारत के बाहर सर्व विश्व में अपने कर्तव्य व सेवाएँ जारी रखे हुए हैं।

ह़ज़रत शेखुल इसलाम ने एक ओर सत्य विद्वानों की वर्ग व संचय तैयार करने का जिम्मा उठाया। तो दूसरी ओर अपने मुरीदीन व मुतवस्सिलीन के लिए फैज़ रसानी का सिलसिला जारी फरमाया। इतिहास गवाह है के आप रोज़ाना रात देर गए, तसव्वुफ (रहस्यवाद व योग विद्या) कि विशाल पुस्तक

"फुतूहात मक्किय" का प्रवचन दिया करते जिस का सिलसिला लगभग तहज्जुद तक जारी रहता।

(मतलअ उल अनवार, पः33)

"शेखुल इसलाम" का संकलन

क्यों के हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने बडे-बडे आसिफय की ज्ञानी व धार्मिक मार्गदर्शित व सहायक किया था तथा समय के बादशाहों ने आप (रहमतुल्लाहि अलैह) की सेवा में ज़ानुए अदब तय किया था। विशेष दिलचस्पी का प्रदर्शन किया तथा ज्ञानी उदाहरण भी पेश किया अर्थात जब नवाब मीर उसमान अली खान 6 राजकुमार की हैसियत से संबोधित हुए तो हज़रत शेखुल इसलाम को 19 जमातिल ऊला, 1330 हिज्री में अमवर मज़हबी का "*नाज़िम*" "*और सलतनत देक्कन का*" सद्रुल सुदूर नियुक्त किया।

किन्तु आप ने हदीस कह कर क्षमा चाही के सरकारी कर्मचारी (नियोजन) के लिए अत्यन्त उ़म्र 55 वर्ष आधार है तथा इस समय आपकी उ़म्र शरीफ 66 वर्ष थी। अर्थात सलतनत के लोगों के अनुसार सरकारी नियोजन की सेवानिवृति का काल गुज़र चुका था, किन्तु समय के शाह ने घोषणा की के "इस समय देश की सेवाओं के लिए आप से अधिक कोई नहीं है।"

(मतलअ उल अनवार, पः 24, अनवारुल अनवार, पः 80/82)

अंत में हज़रत शेखुल इसलाम ने प्रबन्धन धार्मिक कार्य के ओहदे का जाइज़ा लिया तथा आपकी धार्मिक व मज़हबी इसलाहात सरकारी स्तर पर नियुक्त होती रही तथा राष्ट्रीय व स्थानिक सेवाओं का सिलसिला बिना धर्म व समुदाय अनुसार जारी रहा।

2 वर्ष के सीमित काल में आप की सर्वश्रेष्ठ सेवाओं के कारण से आप को धार्मिक मंत्री का ओहदा दिया गया आप के न्यून तथा आप "शेखुल इसलाम" के धन्य दर्जे पर आभूषण हुए जो देहान्त के समय तक आप से अलग ना रहा। इस अवधि में समुदाय का कोई क्षेत्र ऐसा ना रहा, जिस की सुधारता व उद्धार का कारनामा हज़रत शेखुल इसलाम ने परिणाम ना दिया हो।

मसजिदों की संरचना तथा राज्यकर

तौहीद व रिसालत की सुरक्षा के पेश नज़र आप ने देश व विदेश मसजिदों के रचना करवाईं। विशेष रूप से इन में ऑस्ट्रेलिया तथा बसरह की मसजिदों का वर्णन करने के योग्य है। राज्य व मुहल्ले में जो मसजिदें हो चुकी थी इन की मरम्मत व पुनरुद्धार का प्रबंध किया।

जो मसजिदें वीरान थीं इन्हें आबाद करवाया, तथा संगठित व सुनियोजित रूप से खतीब, इमाम और मोज़िन को नियुक्त किया।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 50, अनवारुल अनवार, पः 100)

मसजिदों के गठन व निर्माण करने तथा इन्हें आबाद व बसाने वालोंके लिए किबात व सुन्नत में असंख्या प्रतिष्ठा आधार किए हैं। सुरह तौबा में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- निस्संदेश अल्लाह की मसजिदों को प्रबंधक तथा उसे आबाद करनेवाला वही हो सकता है जो अल्लाह पर तथा क़यामत (अंतिम दिन) पर इमान लाया तथा नमाज़ को स्थापित किया तथा ज़कात संपादन किया हो तथा अल्लाह के सिवा किसी से ना डरता हो।

(सुरह अत तौबाः 09:18)

मसजिदों को बनाने तथा आबाद करने वालों के अखीदा व अ़मल को वर्णन किया गया के वह सम्पूर्ण इ़मान वाले भी हते हैं। उचित अखीदों में पक्के होते हैं तथा इ़बादात व मामलात के सिलसिले में अटल व स्थिर रहते हैं। इन के दिल अल्लाह के भय व खौफ से भरे रहते हैं।

वह अपने पालनहार के सिवा किसी से खौफ नहीं खाते, हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह का जीवन संव्य इस आयत मुबारक का दर्पण है। ग़ौर करें जिन के आगे समय के शाहान के सरक़म हों भला वह किसी से कया खौफ का सकता है?

मदरसों की संस्थान

इतिहास गवाह है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस समय अदर अरखम में मदरसे की स्थापना गठित में लाई, जबके मसजिदों के निर्माण का सिलसिला शुरु नहीं हुआ था। पावन मदीने की गलियां जब नूरुल इसलाम से रोशन हुईं तो कायनात के प्राध्यापक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत मसऩब बिन अ़मीर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को अध्यापक बना कर वहां रवाना किया तथा वह अहले मदीना को किताब व सुन्नत की शिक्षा देते रहे।

इसी महत्व व उच्चता के पेश नज़र हज़रत शेखुल इसलाम ने देश विदेश धार्मिक मदरसे की रचना तथा इन की उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया तथा इन के सक्रियता क लिए बड़ी राशी जारी फरमाई।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 48)

ताकि मदरसों में मुसलमानों की नसलें व पीढ़ी शिक्षा प्राप्त करती रहें। इसलामी सभ्यता से उजागर हो कर समुदाय की सहीह रहनुमाई करने की

योग्य बन जाएं तथा शरीअ़त की बुनियादी शिक्षा प्राप्त कर के इसलाम के सत्य सिद्धांतों तथा अमन व सलामती के कारवान के सालार बन जाएं।

समुदाय की इसलामी निदेशन

धार्मिक सेवाओं मोज़िनी, इमामत, खिताबत तथा खज़ात आदि की अच्छे रूप में परिणाम देने के लिए एक पाठ्यक्रम की आवश्यकता थी।

ह़ज़रत शेखुल इसलाम रह़मतुल्लाहि अलैह़ ने एक आदर्श पाठ्यक्रम व पाठ्यविवरण तरतीब देने का आदेश दिया। जिस की तरतीब का काम आप के एक छात्रा ह़ज़रत मौलाना खाज़ी गुलाम मोही उद्दीन रह़मतुल्लाहि अलैह़ ने परिणाम दिया जो "निसाब अह़ले खिदमाते शरीया" के नाम से नामवर है।

तथा यह पाठ्यक्रम व निसाब आज भी समुदाय की शरई व इसलामी रह़नुमाई के लिए हर रूप से लाभदायक व मान्य माना जाता है। सर्व प्रशंसा व गुणगान अल्लाह़ तआ़ला ही के लिए है (अलह़मदुल्लिलाह़) सामान्य लाभ के उद्देशय से जामिया निज़ामिया ने इस पुस्तक का अंग्रेज़ी में भाषांतर करवाया कर प्रकाशित किया है।

ऑलिया अल्लाह़ के आसतानों तथा बुज़ुर्गाने दीन के खानक़ाहों के सुरक्षा के लिए शेखुल इसलाम ने विशेष ध्यान दिया। सज्जादगान तथा मुतवलियान की परवरिश के लिए दस्तूर की रचना तथा इन के लिए विशेष पाठ्यक्रम के प्रबंध की ओर ध्यान दिया तथा यह पाठ्यक्रम "ह़िदायत अल शुयूख" के नाम से गठित हुआ।

जिसे आप (रह़मतुल्लाहि अलैह़) ही के छात्र ह़ज़रत सैय्यद शाह अबु अल खासिम शत्तारी रह़मतुल्लाहि अलैह़ सद्रुल मदर्रिसीन जामिया निज़ामिया ने तरतीब की।

(अनवारुल अनवार, पः 96)

हज़रत शेखुल इसलाम ही ने धार्मिक शिक्षा को इस दौर के सरकारी मदरसों में अनिवार्य घोषित किया, धार्मिक लिटरचर व साहित्यिक रचना को मुसलमानों के यूवक विभाग में मुफ्त बांटा। नगर व गाँवों था देहातों में धार्मिक महत्व तथा धर्म पर निष्ठा व दृढ़ता को बाखी रखने के लिए खतीबों का प्रबन्ध किया।

शरीअ़त के आधार में तजहीज़ व तकफीन के लिए गुस्सालों (स्नान देने वाले) की तरतीब का प्रबंध किया। इन की परिक्षा गठित की इस से संबंधित "निसाब गुस्सालान" के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित करवाई तथा इस को बांट दिया गया।

(मतलअ़ उ़ल अनवार, पः 58, अनवारुल अनवार, पः 107)

जानवर तथा जबीहा को हलाल करने तथा शरीअ़त के अनुसार ज़िबाह करने के लिए मुल्लाओ का चुना। जिस का सिलसिला अलहमदुल्लिलाह देक्कन में आज भी जारी है।

(मतलअ़ उ़ल अनवार, पः 55, अनवारुल अनवार, पः98)

समुदाय की सुधारता के लिए अन्य सेवाएँ

अल्लाह के बन्दों को सत्य के मार्ग पर लाने के लिए और इन्हें सिरातुल मुसतखीम पर रहने के लिए अल्लाह के कलाम तथा हदीस नबवी में कई स्थान पर आदेश दिया गया के इ़मान वालों को सारी मानवता की सुधारता तथा सुधार की चिन्ता व सोंच करने चाहिए।

सुरह अन नहल में अल्लाह तआ़ला का आदेश हो रहा हैः-

भाषांतरः- अपने रब के मार्ग की ओर तत्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उन से इस ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हों।

(सुरह अन नहलः 16:125)

अर्थात हज़रत शेखुल इसलाम ने साधारण मुसलमानों की आदात व शिष्टाचार व सभ्यचार व चरित्र की सुधारता के लिए "अनजुमन इसलाह मुसलमानान" की स्थापना रचना में लाया।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 52, अनवारुल अनवार, पः88)

समुदाय को शरीअ़त पर पाबंद करे हुए नशा तथा शराब आदि के उपयोग को सजा व अपराध के योग्य घोषित दिया। शराब की दुकानोंको विदेश शहर स्थानान्तरण करने का आदेश जारी किया तथा विशेष व मुबारक अवसर पर इन्हें खुला रखने पर पाबंदी लगाई गई।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 52, अनवारुल अनवार, पः 88)

रमज़ान मुबारक में दिन के समय में भी समारोह व दावतें हुआ करतीं। हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने इन पर रोक लगा दिया। होटलें खुली होती थीं, आप ने होटलों पर दिन में परदे लगाने का आदेश दिया।

(अनवारुल अनवार, पः 100, मअ़ारिफ अनवार, पः 14)

आसिफय सरकार के दौर में नाप-तोल के तराजू एक समान नहींथे। सामान्य रूप से लेन-देन के समय नाप-तोल में कमी अधिकता हुआ करती

थी। हालांके यह शरीअ़त में बड़ा पाप है। हज़रत शुऐब अलैहिस सलाम की क़ौम नाप-तोल में कमी-अधिकता करने के कारण अज़ाब में व्यस्त हुई।

हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने देश मेंहोने वाले सम्पूर्ण तराजुओं की प्रबोधन व जांच करवाने का प्रबंध करवाया। तथा नाप-तोल से पैदा होने वाली खराबियों का रोक-थाम किया।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 58, अनवारुल अनवार, पः 106)

धार्मिक पुस्तकें तथा प्राचीन पुस्तकों के पन्नों की पुड़ियां बाँधी जाते थे। हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने विशेष रूप से समुदाय को इस अनादर व निरादर के वबाल से बचाने के लिए "अनजुमन तहफुज़ औराख मुतबरका" नामी मजलिस संरचना की।

जिसे आप ने धार्मिक पुस्तकें, इसलाम पन्ने तथा विशेष रूप से अल्लाह तआ़ला के कलाम के पन्ने की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी सौंपी थी।

(अनवारुल अनवार, पः 107)

हज़रत शेखुल इसलाम के मदीने में स्थापना के बीच किसी ने आप को यह सूचना दी के फलां साहिब फाखा के कारण से मिट्टी घोल कर पिया करते हैं तथा किसी के सामने अपनी तकलीफ का प्रदर्शन नहीं करते।

यह सुनते ही हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह बेक़रार हो गए, आप पर इस घटना का गहरा प्रभाव हुआ के आप ने इसी समय मदीने के मिसकीन लोगों की मदद और इन के सेवा के लिए संगठन स्थापित की। जिस की आप ने अपने स्थापना तक अच्छे प्रकार से निगरानी परिणाम दी।

(मतलअ़ उ़ल अनवार, पः 41)

चन्द्र दिनांक का जिम्मे चाँद पर मुनहसर होता है। सामान्य रूप से महीने चांद के दिखाई देने या ना दिखाई देने से संबंधित उलझन रह करती थी। विशेष रूप से रमज़ान तथा ईदुल फित्र के चांद देखने के मसले पर लोग तशवीश में रहते थे।

हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने जनता को निश्चिंत करने के लिए एक समिति "रूयत हिलाल" के नाम से उत्पत्ति की जिस में आप ने विद्वानों व मशाइ़क़ तथा अध्यक्ष निपुण फिलकियात को शामिल किया तथा खुद भी इस की निगरानी फरमाया करते।

रूयते हिलाल कमिटी की सेवाओं का यह सिलसिला अलहमदुल्लिलाह आज भी हैद्राबाद देक्कन आदि में स्थापित है।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 56, अनवारुल अनवार, पः 112-115)

दफतर खज़ा को भी आप ने श्रेष्ठ रूप से तरतीब दी, खाज़ी लोगों के लि सिद्धांत जारी किए। विवाह के प्रमाणपत्र की शकलः जो इन दिनों देक्कन में हमदेख रहे हैं वह हज़रत शेखुल इसलाम ही का कारनामा है।

यह आप ही का फैज़ान है के आप ने विवाह, तला, और खुलअ़ आदि से संबंधित पेश आने वाली समस्याओं व कठिनाईयों को समय से पूर्व दौर फरमा दिया जिस का अंदाजा हम अपने वातावरण मं अच्छे रूप से कर सकते हैं।

(मतलअ़ उल अनवार, पः 52)

स्पष्ट रहे के हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह सलतनत के एक आदरणीय धार्मिक मंत्री व वज़ी थे। अर्थात आप देक्कन के अनेक स्थान के

सरकारी दौरे भी किया करते, धार्मिक क्रियाकलाप का अच्छे रूप से अवलोकन करते, धार्मिक सेवाओं का निरीक्षण लेते तथा इस में अनिवार्य संशुद्धि व सुधार करते।

1325 हिज्री में आप ने औरंगाबाद और इस के खरीब के चार इलाक़ों का दौरा किया था तथा इस दौरे में आप ने 94 स्थान का अवलोकन किया, जिस में 28 मसजिदें, 7 मदरसे, 29 बारगाहें तथा इस के अतिरिक्त अन्य कार्यालय, ईदगाह, कब्रिस्तान, विश्राम कक्ष तथा सराय आदि शामिल हैं।

क्यों के आप सलतनत के धार्मिक मंत्री थे, इस आधार से आप के प्रति ग़ैर-मुस्लिम लोग से संबंधित कार्य तथा जायदादें भी थीं। आप ने जानबदारी तथा क़यानत के बिना अपनी जिम्मेदारी अच्छे रूप में निभाई।

(अनवारुल अनवार, पः 118/119)

इन स्थान का आप ने केवल अवलोकन व मअ़इना फरमाया, बल्कि इन से संबंधित आदेश को अनिवार्य हिदायत दीं, इसी प्रकार 1322 हिज्री में "रौज़ा बुज़ुर्ग हज़रत बन्दा नवाज़" की सेवाओं को उजागर की गईं तो आप ने सज्जादगान की शिक्षा का विशेष रूप से प्रबन्ध फरमाया।

बारगाह (दरबार) की रचना तथा अन्य कई रफाही कार्य परिणाम दिए। गुलबरगा शरीफ में "मदरसे दीनिय" की बुनियाद ड़ाली, शिफाखाना (निदानगृह) की स्थापना कार्यकलाप में लाया तथा इस का सम्पूर्ण प्रबन्ध फरमाया।

(अनवारुल अनवार, पः 101/102)

अतः हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह ने अपना सारा जीवन सम्पूर्ण धर्म की तजदीद (पुनश्चर्या), समुदाय व प्रजा की सुधारता तथा क़ौम

की सेवा में सर्फ फरमाई। धार्मिक सेवाओं के सम्पूर्ण क्षेत्र में आप ने गहरे परिणाम छोडे हैं।

मुसलमानों के सम्पूर्ण क्षेत्र तथा अनेक विभाग के सम्पूर्ण लोग आप की सेवाओं से लगातार लाभ उठा रहे हैं। आप की सेवाएँ वह विशाल सेवाएँ हैं, जिन्हें विश्व छिपा नहीं सकती, आप के कारनामे वह उच्च व उत्तम हैं जिसे मुसलमान हमेशा अपने लिए पथप्रदर्शक बनाएंगे।

आप की पेश अनमोल रचना तथा अनुसंधान पुस्तकों से अहले सुन्नत व जमात के विशेष व सामान्य रहबरी व रहनुमाई प्राप्त करते रहेंगे।

अल्लाह तआला हमें हज़रत शेखुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह की शिक्षा पर कारबंद रहने की मार्गदर्शन प्रदान फरमाए। आप के फैज़ान से लाभ उठाने तथा आप के अनवार से फैज़ दान फरमाए।

आमीन